वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

जनवरी - 2015

* परम पूजनीय भगवान देवात्मा
का 164वां शुभ जन्म महोत्सव

नया साल मुबारक हो

जब तक यह पत्रिका आप तक पहुंचेगी नया वर्ष चढ़ चुका होगा । हम सब पाठकों को नये वर्ष की बहुत-2 शुभकामनाएं भेज रहे हैं। यह वर्ष हम सबके लिए हमारी शारीरिक, मान्सिक वा हार्दिक उन्नति लाने वाला हो । आप सब का धन्यवाद कि पिछले साल की पत्रिकाओं के विषय में आपके पत्र वा टैलीफोन मिलते रहे हैं। एक-2 लेख में आपको बहुत प्रभावित किया है, और कई पाठकों ने यह भी कहा है कि वह पत्रिका को कम से कम दो बार जरूर पढ़ते हैं और कई लेख कई बार पढ़ते है। गुरू महाराज की बहुत कृपा है कि हम तुच्छ कुछ पत्रिका के द्वारा उनका सन्देश आप तक पहुंचा सके हैं। हमारी ऐसी कामना है कि आने वाले वर्ष में हम और भी उत्साह के साथ और लाभदायक लेख आपकी सेवा में प्रस्तुत कर सकें। आपके विचार हमारे लिए उत्साह प्रद होते हैं।

हमारे देश का यह दुर्भाग्य है कि पश्चिमी सभ्यता ने इतना गहरा रंग चढ़ा दिया है कि नये वर्ष का आरम्भ डिस्को, डान्सों, शराबों, नशों और उनके द्वारा और कुकर्मो से शुरू होने लगा है। फिर शराब के नशे में बड़े-बड़े प्रण लिए जाते है, जो सुबह होते ही काफूर हो जाते है।

हम परम पूजनीय भगवान के सेवक होकर इस नये वर्ष में अपने शारीरिक, मान्सिक और अध्यात्मिक विकास के लिए अच्छे प्रण लें। व्यायाम, सैर, अच्छी किताबें पढ़ना और विशेष रूप से परम पूजनीय भगवान द्वारा रचित पुस्तकों का पाठ करना अपने जीवन का नियम बनाऐं। परम पूज्य भगवान ने इन ग्रन्थों को खूने जिगर से सींचा है। वह बहुमूल्य सत्य और तत्व हमें प्रदान किए हैं जो अमीर से अमीर, उच्च पदधारियों के नसीब में नहीं हैं। यह बहुमुल्य सत्य हमें मुफ्त की तरह मिलते हैं। उनका लगातार अध्ययन हमारे जीवन को नया मोड़ दे सकता है। यह नया साल हमें यह Warning (चेतावनी) भी देता है कि हमारी जिन्दगी का एक और वर्ष कम हो गया, इसी प्रकार वर्ष बीतते रहेंगे और हमारा अन्त निकट आता जाएगा । वैसे जिन्दगी का पल का भी भरोसा नहीं। हम सबके लिए ऐसी कामना है कि हम हर वर्ष कुछ विकास की ओर कदम बढ़ाऐं। कुछ सेवा के प्रण लें। परम पूजनीय भगवान की आशाऐं तो बहुत ऊँची हैं, परन्तु हम उस ओर कुछ कोई कदम तो बढ़ाएं। अपने उपकारियों को याद करें , उनके लिए और अधिक सेवाकारी हों। चारों जगतों की कुछ न कुछ सेवा प्रतिदिन करें। हमारी ऐसी कामना हम सबके लिए है। मैं भी इस ओर गहराई से सोच विचार कर सकूं और अपने भले के मार्ग पर पड़ संकू । आप सबके लिए भी ऐसी कामना है। यदि आप में से कोई अच्छा प्रण ले, उसे हमें लिख सकते है, ताकि आपको और मिल सके प्रोत्साहन।

बहुत-2 शुभ कामनाओं के साथ

सुरजीत बराड़

धर्म जीवन

खण्ड 28 अंक 1
जनवरी – 2016
वार्षिक मूल्य 50 रूपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

महोत्सव मुबारक 2014

परम पूजनीय भगवान देवात्मा संस्थापक देव समाज और देव धर्म का 164 वां मुबारक शुभ जन्म-महोत्सव देव आश्रम स्थित देवी नगर निकट डेराबसी (चण्डीगढ़) में पिछले वर्ष की तरह बड़े चाव भाव से 5 दिसम्बर 2014 से 8 दिसम्बर 2014 तक मनाया गया।

इस पावन पर्व को मनाने के लिए बहुत सी तैय्यारियां करवाई गई। कोई 4 लाख के करीब रू० खर्च करके श्री सुखदेव जी (इंगलैंड) द्वारा महोत्सव हाल की फालस सीलिंग लगवाई गई। हाल में बहुत सुन्दर पलास्टक पेंट करवाया गया। सुन्दर टाईलस लगवाई गई। हाल के तीनों गेट अलमोनियम के लगवाए गए। सारे विशाल भवन का अन्दर बाहर से सफेद पेंट करवाया गया। 5 कमरे अन्दर बाहर से पलस्तर करवा कर रहने योग्य बनाए गए। सड़क से बड़े ऐंटरैन्स से लेकर कोई 200 फीट लम्बी कार मार्ग पर मोटी सुन्दर टाईलें लगवाई गई।

देव धर्म मिशन की ओर से काफी खर्च करके हाल के अन्दर बाहर बिछाई के लिए कार्पट खरीदी गई। 60 के करीब सुन्दर फोलडिंग चारपाईयां नई और बनाई गई। यात्रियों के सामान आदि रखने की सहूलियत के लिए 20 के करीब Rack(खुली अलमारी) तैय्यार कीं गई और 10 और अलमारियों का सामान Rack तैय्यार करने के लिए श्रीमान जगजीत सिंह जी की सहायता से पहुंचाया गया। श्रीमान जगदीष सिंह जी की सहायता से बहुत से बैनर्ज़, माटोज़ और फोटोज़ तैय्यार कराए गई। हाल के भीतर बहुत सुन्दर सफेद नई चदरें बिछाई गई।

लंगर का प्रबन्ध, तीनों समय का खाना तैय्यार होता रहा। टैंट हाऊस से मेज कुर्सियां, तख़्तपोश, बैंड बाजा, लाऊड स्पीकर, Video, फोटोज़ आदि का प्रबन्ध किया गया। सफाई के लिए एक योग्य सेवादार रखा गया। कुछ मज़दूरों की सहायता ली गई। किताबों की बड़ी स्टाल लगाई गई।

यात्रियों की सहूलियात के लिए सादा चाय, दूध की स्टाल का प्रबन्ध भी किया गया। साफ शुद्ध पानी के गैलन खरीदे गए। रोशनी, लाऊडस्पीकर, सजावट और रोशनी का बहुत सुन्दर प्रबन्ध किया गया। श्रीमान नरेन्द्र जी और दीपचन्द जी मेरठ कई दिन पहले आकर चारपाईयां बुनने का काम खुशी खुशी करते रहे। खुशपाल सिंह जी (नये सत्संगी) बगां से भी कुछ पहले आकर उनकी सहायता करते रहे।

श्रीमान जगजीत सिंह जी लुधियाना से 2 ईतवार आ आकर Rack तैय्यार करने का काम अपने हाथ से करते रहे। श्रीमान जगदीष सिंह जी चण्डीगढ़ से जा जाकर बहुत संग्राम करते रहे। श्री रमेश जी वहां रहकर सेवाकारी होते हैं, सारी तैय्यारियों में दिलो जान से सहायक होते रहे।

क्या फूलों से भरे गमलों और क्या बनावटी फूलों से स्टेज को सजाया गया। गुरू महाराज की भव्य छवि के इर्दगिर्द रोशनी की लड़ियों के साथ सुन्दर सजावट की गई। क्यारियों और आंगन में फूल और पौधे अपनी शोभा दे रहे थे। कार मार्ग के दोनों तरफ रंग बिरंगे पचासों झंडे अपनी शोभा दे रहे थे। आश्रम का चप्पा चप्पा साफ सुथरा चमक रहा था। प्रवेश सभा से पहले सारा आश्रम नई दुल्हन की तरह सज रहा था। क्या लंगर, क्या यात्रियों का ठहरना, उनके कमरे और विशाल हाल सब एक सुन्दर नज़ारा पेश कर रहे थे।

महोत्सव के यात्रियों का आगमन का नज़ारा बड़ा ही सुन्दर था। चण्डीगढ़, पंचकूला आदि लोकल यात्रियों को छोड़ अच्छी गिणती में यात्री, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, यूपी., उत्तराखण्ड, हिमाचल, दिल्ली आदि के निम्नलिखित स्थानों से 4 दिसम्बर को ही पधारने लग गए थे। सभा के समय डेढ़ दर्जन के करीब कारों, बस, स्कूटरों, थ्री व्हीलरों का अच्छा जमघट देखने वाला होता था।

पंजाब से मुहाली, समराला, लुधियाना, संगरूर, मौड़ा, बटिंडा, कल्याण, मोगा, थराजवाला, गोनियाना मण्डी, दड़बा, बलटाना, जवाहरपुर, फाज़िलका, नया शहर।

हरियाणा से अम्बाला, यमुना नगर, मल्लेका, केसूपुरा, ढाणी, पंचकूला, फरीदाबाद, हिसार, गुड़गांव।

राजस्थान से गंगानगर, पदमपुर, गजसिंह पुर।

हिमाचल से धर्मशाला, सोलन।

यू.पी. से सहारनपुर, रुड़की, मेरठ, देहरादून, लखनऊ, श्री अकबरपुर, मोदी पुरम, कुआं खेड़ा।

प्रवेश सभा 5.12.2014 शाम 4.30 बजे।

सभापति : श्रीमान धर्म सिंह जी चौहान।

ठीक सभा का दूसरा घण्टा बजने के साथ ही, हाजरीन सभा हाल में एकत्रित हो गए। "हमारे पूजनीय सत्गुरू जी तुम हो धन्य, तुम हो धन्य" के अलाप के साथ ही पावन महोत्सव का सूत्रपात हो गया। भजन के बाद परम पूजनीय भगवान दोवात्मा की पावन छवि का सुन्दर हार के द्वारा अर्चन किया गया, फिर देव स्तोत्र के समूह गान के बाद सभापति जी ने देव स्तोत्र की व्याख्या की। सब के बैठ जाने पर सभापति जी ने गुरू के दरबार में महोत्सव मुबारक की सफलता के लिए सहाय प्रार्थना की और देव प्रभावों को पाने के लिए सहाय मांगी।

प्रवेश सभा का संचालन श्रीमान धर्म सिंह जी चौहान सेवक देव समाज द्वारा किया गया। महोत्सव की सफलता के लिए परम पूजनीय श्री देवगुरू भगवान से सहाय प्रार्थना एवं आशीर्वाद याचना करते हुए उन्होंने दूर-दराज से पधारे हुए सेवकों एवं श्रद्धालुओं का स्वागत एवं अभिनन्दन किया। प्रवेश सभा के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने बताया कि प्रवेश सभा के द्वारा हमें महोत्सव की शेष प्रणाली की सफलता के लिए व उसमें अपनी भागीदारी एवं जिम्मेदारी को अनुभव करते हुए अपने दीन-हीन होने का परिचय देकर स्वयं को गुरूमयी अवस्था में रखकर अधिक से अधिक देव प्रभाव ग्रहण करने हेतु प्रयास-रत रहना है।

अपने वक्तव्य में सभापति ने बताया कि असंख्य धर्ममतों की वर्तमानता होते हुए भी देव धर्म एवं देव समाज की स्थापना क्यों हुई और उसकी क्या आवश्यकता थी। इसका उत्तर जानने से पहले यह प्रश्न करना होगा कि चिकित्सा विज्ञान मैडिकल कालेज तथा मानसिक ज्ञान प्राप्त व उन्नत करने के लिए संस्थानों की स्थापना क्यों हुई? यह सब नेचर के विकास क्रम की देन है। जब तक चिकित्सा ने वैज्ञानिक रूप नहीं लिया था तो रोगों को दैवी शक्तियों का प्रकोप जानकर उनका निदान झाडफूंक आदि अंधविश्वासों द्वारा किया जाता था। उसी प्रकार देव धर्म से पहले धर्म जगत में मिथ्या व कल्पना का ही राज था। विभिन्न धर्मों में पूजा-पाठ भजनकीर्तन तीर्थ यात्रा स्नान-ध्यान इबादत, प्रार्थनाएं आदि साध न प्रचलित थे और आज भी उनकी कमी नहीं है जो एक रिवाज मात्र ही दिखाई देते हैं। दुनिया में अत्याधिक ज्ञान व बेशुमार धर्मों के होते हुए भी अपराधों व मनुष्य के नीच जीवन में कमी की अपेक्षा दिनों दिन बढोतरी हो रही है। बड़े से बड़े अपराधी, आतंकवादी चोर-लुटेरे, व्यभिचारी, रिश्वत खोर व नीच जीवनधारी किसी न किसी धर्म को मानने वाले हैं तो फिर उनके जीवन में बेहतर परिवर्तन क्यों नहीं होता। दर-असल इन सब पाप कर्मों व अत्याचारों के पीछे कहीं न कहीं प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से कहलाने वाले धर्मों का ही हाथ है क्योंकि अधिकांश धर्म मतों ने गुनाहों की माफी का नुस्खा देकर उन्हें और बढ़ाया है। जहां यह शिक्षा हो कि थोड़ी सी पूजा पाठ करने या सुनने, अमुक स्थान पर स्नान करने, दान करने आदि और इससे भी आगे केवल किसी धर्ममत में विश्वास करने मात्र से जन्म-जन्मान्तर के पाप विनष्ट होते हैं और इस लोक व परलोक में सारे सुख प्राप्त होते हैं, मुक्ति मिलती है तो मनुष्य जो पहले ही अपने स्वभाव वश सुखों का अनुरागी है कैसे पाप करने से बच सकता है, अपितु वह तो ऐसे धर्मों के प्रलोभनों से और अधिक पापी बनेगा। जहां यह बताया गया हो कि कौन कहता है कि तुम पापी हो तुम तो ब्रह्म का अंश हो, तुम्हारा आत्मा तो निर्लेप है, उस पर भले बुरे किसी कर्म का कोई असर नहीं पड़ता तो ऐसी शिक्षा की वर्तमानता में इन्सान के भला होने की कल्पना भी नहीं की जा सकती। लेकिन नेचर के विकास क्रम में धर्मजगत में भी Replacement की आवश्यकता थी अर्थात मिथ्या धर्मों के स्थान पर सत्य धर्म की आवश्यकता थी। परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने ऐसे देव धर्म, सत्य धर्म एवं देव समाज की स्थापना की जिसके यह मुख्य लक्ष्य है:

1) सच्चे धर्म का पहला लक्षण यह है कि वह मनुष्य में पाप जीवन की जड़ काटता है और उसका उच्च जीवन में विकास करता है।

2) सब प्रकार की मिथ्याओं से निजात दिला कर विज्ञान मूलक सत्यों पर ले जाता है।

3) विश्वगत संबन्धों में हितकर मेल पैदा करके सच्चा स्वर्ग पैदा करता है। जिस प्रकार उद्भिद जगत भौतिक जगत का, पशुजगत उद्भिद जगत का तथा मनुष्य जगत पशुजगत का विकसित रूप हैं उसी प्रकार देवात्मा मनुष्य जगत का विकसित रूप हैं तथा उसी विकास क्रम में उन द्वारा स्थापित देवधर्म व देव समाज मिथ्या धर्म मतों/समाजों का विकसित रूप हैं जिसमें विश्व के कुल सुधार की जड़ है। काश हम ऐसे महानतम विश्व गुरू व उनकी स्थापन की हुई समाज से जुडकर अपना भला कर सके।

उसके बाद श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने भिन्न भिन्न स्थानों से इस तीर्थ स्थान पर आए यात्रियों का दिली भावों से स्वागत किया। उन्होंने अपने सौभाग्य और सबके महा सौभाग्य का वर्णन किया। उनका शुक्रगुज़ारी से दिल भर भरकर आ रहा था। उन्होंने महा उत्सव से लाभ उठाने के कुछ नियमों का वर्णन किया। उन नियमों के पूर्ण होने से अवश्यक लाभ होगा और देव प्रभाव भी मिलेंगे। देव प्रभाव पाने से ही इस महोत्सव पर आना सफल हो सकता है। मेरी यही कामना है कि हम सब देव प्रसाद को पाकर यहां से जाएं।

इसके बाद श्रीमान बलदेव सिंह जी ने अगले दिन का प्रोग्राम बताया और जय ध्वनि करके यह सभा समाप्त हुई।

6.12.2014, पहली सभा : 9.30 बजे - सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी।

भजन के गान के बाद, छवि द्वारा परम पूजनीय भगवान देवात्मा का सुन्दर फूलों के हार से अर्चन किया गया और देव स्तोत्र का गान वा व्याख्या की गई। उसके बाद सभापति जी ने हृदय के गहरे भावों से गुरू के दरबार में सहाय प्रार्थना की।

सभा का विषय था "परम पूजनीय भगवान देवात्मा का परम अवश्यक जीवन दायक सम्बन्ध", सभापति जी ने बताया नेचर के चारों जगत हमारे सम्बन्धी हैं। आम तौर पर हम भौतिक जगत के सम्बन्धियों को तुच्छ समझते हैं। पर हवा, पानी, रोशनी के बिना कोई जगत भी जिन्दा नहीं रह सकता। हवा स्वयं बेजान है, पर सब जीवन, धारियों को जीवन प्रदान करती है। इसके बिना कोई जीव एक मिन्ट भी जीवित नहीं रह सकता। हवा के साथ हमारा सम्बन्ध परम अवश्यक जीवन - दायक है। यदि भौतिक जगत न होता तो कोई पशु जगत, वनस्पति जगत वा मनुष्य जगत भी न होता। इसलिए इस परम अवश्यक सम्बन्धी को तुच्छ समझना ग़लत है। दूसरा हमारे जीवन का आधार वनस्पति जगत है। मनुष्य की उत्पति पशु जगत के विकास का फल है। सारे मानव जगत से भी हमारा अटूट सम्बन्ध है। हमारी उत्पत्ति माता - पिता से है और उसके बाद सामाजिक जीवन भी मानव के द्वारा ही दिया हुआ दान है।

सारा ज्ञान, हुनर, विद्या, सामाजिक मूल्य, संस्कृति, नैतिकता की समझ सामाजिक जनों के बग़ैर असम्भव है। मनुष्य जीवन के विकास के लिए विकसित समाज अमूल्य योगदान पाता है। मनुष्य जगत के बिना मनुष्य बोली भी नहीं सीख सकता। इस सब के बावजूद मनुष्य जीवन अधूरा है। मनुष्य जीवन रखता है, परन्तु जीवन का ज्ञान नहीं रखता। मनुष्य ने शरीर का ज्ञान बहुत प्राप्त कर लिया है। पर जीवन केवल शरीर नहीं। आत्मा के ज्ञान के बिना शरीर का ज्ञान अपने आपका ज्ञान नहीं। अपने आपको जानना ही आत्म ज्ञान है। अपने परिचालक भावों को अपने प्रकृत रूप को जानने के लिए विशेष ज्योति की आवश्यकता है। जो केवल देव शक्तियां, से ही पैदा होती है। विश्व के विकास क्रम में देव शक्तियां, सचाई और भलाई का पूर्ण अनुराग, झूठ और बुराई के प्रति पूर्ण घृणा की शक्तियां केवल परम पूजनीय भगवान देवात्मा के भीतर ही पैदा हुई हैं। उनके कारण केवल देवात्मा ही देव ज्योति का दान देते हैं। उनकी देव ज्योति अधिकारी आत्माओं को उनके परिचालक भावों को सच्चा रूप दिखाती है। मनुष्य जब तक अपने भावों को असल रूप में नहीं देखता, उसको अपने आप से सच्चा परिचय ही नहीं होता। वह अपनी सही

कीमत से कहीं अधिक कीमत लगाता है। इन देव शक्तियों से निराले तेज की उत्पत्ति हुई है। जब यह देव तेज अधिकारी मनुष्यों को मिलता है, तो उनके नीच भाव नष्ट होते हैं। उच्च भाव देव तेज प्राप्त पाए बिना पैदा नहीं हो सकते। मनुष्य जीवन की रक्षा नीच गतियों से मोक्ष और उच्च गतियों के करने में है। भिन्न भिन्न सम्बन्धों में उपरोक्त देव प्रभावों का दान देकर परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने विशेष उच्च परिवर्तन पैदा किए हैं। सरदार हरनाम सिंह जी के जीवन के सच्चे इन्कलाब के दृश्य पेश किए। श्रीमान डाक्टर सिरी राम जी का सुन्दर उच्च परिवर्तन सुनाया। बच्चों में उच्च परिवर्तन बताए। माता पिता के भक्त बच्चे पैदा किए हैं। केवल देवात्मा के द्वारा ही यह सम्भव था कि उन्होंने परोपकार में जीवन कुर्बान कर दिया। परम पू० पूजनीय भगवान के परम अवश्यक सम्बन्ध के बिना मनुष्य की आत्मिक विकारों से शुद्धि नहीं हो सकती। मनुष्य को उसके नीच अनुराग कैसे अन्धा और अपहरणकारी बनाते हैं, विशेष कर सभापति जी ने धन अनुराग का बहुत भावुक होकर ब्यान किया कि सारी दुनियां इसके पीछे Money Madness का शिकार है। कहलाने वाले साधु या आश्रमों के मालिक धन अनुराग और काम वासना के पुतले बनकर अपना और अपने श्रद्धालुओं का नाश कर रहे हैं। इसका दुखदाई वर्णन किया। देव प्रभावों के बगैर ऐसे नारकिय भावों का असल रूप नज़र नहीं आता। उनसे मोक्ष तो क्या होनी थी, इनके प्रति अन्ध कार रखकर, इनके अधीन होकर जीवन नाश होने पर मनुष्य अनुचित दुख पाने से नहीं बच सकता। देव आत्मा का सम्बन्ध मनुष्य का सच्चा रक्षक है। हमारी निर्माणकारी शक्ति का विकास उनके प्रभावों के बिना सम्भव नहीं।

सभापति जी के ब्यान के बाद भरपूर कौर जी ने अपने परिवार में इस सम्बन्ध की अज़मत का ब्यान किया। क्या यह सभा और क्या उसके बाद एक परिवार की परिवर्तन कथा बहुत प्रभावशाली थी और हाजरीन ने गुरू के परम अवश्यक सम्बन्ध को गहराई से अनुभव किया। (श्रीमती भरपूर कौर जी का ब्यान अलग किसी अंक में छापने का यत्न करेंगे)।

6.12.2014 शाम 4 बजे लैक्चर

विषय : मनुष्य जीवन का लक्ष्य क्या है?

वक्ता : प्रिंसीपल श्रीमति सुरजीत बराड़

इस लैक्चर के प्रधान माननिय श्री किशन सिंह जी चौहान थे। उन्होंने पहले वक्ता का संक्षेप में परिचय करवाया और फिर उन्हें बोलने के लिए निमन्त्रित किया।

वक्ता ने बताया कि मनुष्य आज के युग में इतना व्यस्त है कि उसे यह सोचने का समय ही नहीं है कि इस संसार में दुर्लभ मानव जन्म पाकर उसका जीने का अर्थ क्या है? वह खाने पीने, धन कमाने, सैक्स, नशे, मान बड़ाई प्रशंसा, पद प्रमुत्व को पाने में ही ज़िन्दगी को ख़त्म कर देता है। ज्यों ज्यों सुखों की चाह बढ़ती जाती है, वह दुखों में फंसता जाता है, उसका लक्ष्य भला वा हित नहीं रहता बल्कि केवल सुख प्राप्त करना रह जाता है, वह धीरे - धीरे दुखों को सामने देखकर भी उनसे नहीं बच सकता, बेबस और लाचार हो जाता है। सुखों का लक्ष्य Narrow होता है। क्षणिक सुख के लिए मनुष्य मौत को गले लगा लेने को भी तैय्यार है। इसके कई उदाहरण पेश किए। Leo Talstoy का लिखा एक उदाहरण पेश किया कि एक जन जंगल में जानवरों से बचने के लिए एक

सूखे कुएं में शरण लेता है, परन्तु कुएं में ड्रैगन मुंह खोले उसे खाने के लिए बैठा है, उससे बचने के लिए वह एक टहनी से लटक जाता है। टहनी पर बहुत से चूहे हैं परन्तु उसी समय ऊपर से शहद गिरता है तो वह शहद के सुख में मस्त हो जाता है और मौत को भूल जाता है। सचमुच मनुष्य की ऐसी ही कृपा-पात्र अवस्था है।

जितने बाबे हमने पाल रखे हैं, वह सब मनुष्य को सुख अनुरागों के लालच देकर ही अपने अनुयायी बनाते हैं, अन्धा धुन्ध मानवता बिना किसी तर्क किए उन पर कि जो कई प्रकार के criminals हैं, अपना धन और समय लुटाते हैं।

फिर भी कुछ दुख उठाने भी अनिवार्य हैं। माता को मातृत्व का सुख प्राप्त करने के लिए, मनुष्य को धन कमाने के लिए, शिक्षा प्राप्त करने के लिए कई प्रकार के दुख उठाने पड़ते हैं, जो वाजिब हैं, परन्तु लक्ष्य सुख प्राप्त करना ही रहता है।

फिर उन्होंनें कुछ सात्विक पुरूषों का वर्णन किया, जिन्होंने मानवता के दुखों को देखा और उन्हें दूर करने के लिए बहुत कष्ट उठाए। उन्होंने महात्मा बुद्ध, कार्ल मार्कस, मदर टैरेसा महात्मा गांधी आदि के उदाहरण पेश किए। उन्होंने बताया कि ऐसे ही मसीहों के बुत्त लगते हैं, धनवानों के बुत्त नहीं लगते। ऐसे ही सात्विक लक्ष्यधारियों के जन्मदिन उनके मरने के बाद भी मनाए जाते हैं।

मनुष्य का सौभाग्य है कि उसे उन्नतशील मान्सिक शक्तियां मिली हैं और वह ज्ञान प्राप्त कर सकता है। Know Thyself सबसे बढ़कर ज्ञान अपना ज्ञान प्राप्त करना है, अपनी भावशक्तियों का ज्ञान प्राप्त करना है, क्योंकि हमारी भाव शक्तियां ही हमारा लक्ष्य निरधारित करती हैं। हम अपनी भावशक्तियों को जानें कि हमने किस किस सुख अनुराग को बढ़ाकर क्या क्या हानियां उठाई हैं।

सात्विक भावधारी सुधारवदी थे, परन्तु मंजिल और भी आगे है। नेचर के विकास क्रम ने श्रेष्टता का कदम भरा और देवात्मा पैदा कर दिए। उन्होंने मनुष्य के स्वभाव का बारीकी से अध्ययन किया और फरमाया कि किसी प्रकार का सुख लाभ करना मनुष्य का लक्ष्य नहीं है। सुख हमें घमंडी, स्वेच्छाचारी, colous, निर्दयी और आंतकवादी तक बना देते हैं।

जो परम पूजनीय भगवान के साथ जुड़े उनके लक्ष्य बदल गए। उनकी काया कल्प हो गई। हम जैसे आत्माओं को बचाना उन्होंने अपना लक्ष्य बना लिया। मनुष्यों के स्वभाव को बदला, उनसे पाप और मिथ्या छुड़ाई, दूसरों के लिए सेवाकारी होकर उच्च जीवन का मार्ग दिखाया।

सात्विक जीवनधारी एक दो पक्षों में हमारे रहबर हो सकते है, जैसे मदर टैरेसा हमें हमदर्दी सिखा सकती है, पवित्र मनुष्य हमें पवित्रता सिखा सकता है, ईमानदार हमें ईमानदार बना सकता है परन्तु आत्मा का ज्ञान नहीं दे सकता।

देव धर्म ने जीने का सही मार्ग वा हमारे जीवन का लक्ष्य दिखाया है।

देव धर्म बताता है :- 1) कि मनुष्य का लक्ष्य है कि वह अपने नीच आकर्षणों को देखे किन किन से उसे ख़तरा है और अपने जीवन की हानि है।
2) मनुष्य अपनी योग्यताओं को पहचाने और अपने भीतर के उच्च गुणों को विकसित करे।
3) उच्च गुणों को विकसित करके दूसरों की सेवा करना लक्ष्य है।

4) देव जीवनधारी देवात्मा के देवरूप को देखने की आंख विकसित करना मनुष्य का उच्चत्म लक्ष्य है।

अर्थात अपने सब प्रकार के नीच सुखों के आकर्षणों से मोक्ष और उच्च जीवन का विकास ही मनुष्य का सही लक्ष्य है, जो देवात्मा के देव रूप से सम्बन्ध बनाकर ही प्राप्त किया जा सकता है।

यह सारा लैक्चर बहुत ही सरल था, उपस्थित जनों को समझने में कोई कठिनाई नहीं थी, ऐसे भाव उन्होंने प्रगट किए।

दूसरा लैक्चर श्रीमति डाक्टर शशी जैन का था, जिसके सभापति भी श्रीमान किशन सिंह जी चौहान थे। पहले उन्होंने डा० शशी जी का संक्षिप्त परिचय करवाया फिर उन्हें लैक्चर के लिए निमान्त्रित किया।

विषय : गुरू का महत्व।

भारतीय संस्कृति में गुरू का महत्त्व आदिकाल से ही रहा है। 'ग' का अर्थ है अन्धेरा और 'रू' का अर्थ है प्रकाश अर्थात् गुरू वह हस्ती है जो कि अज्ञानता के अन्धेरे को दूर करके ज्ञान का उजाला करता है। ब्रह्मा, विष्णु, महेश को सृष्टि का सृजनकार माना जाता है और गुरू इनके समान ही पूजनीय हैं।

कबीर जी ने कहा है:- गुरू गोबिन्द दोनों खड़े काके लागूँ पाँए। बलिहारी गुरू अपने जिन गोबिन्द दियो बताए। अर्थात् ईश्वर और गुरू दोनों में से गुरू ज्यादा वन्दनीय है क्योंकि गुरू ही ईश्वर तक पहुँचने का रास्ता बताता है। हिन्दु धर्म में ईश्वर पर इतनी अधिक आस्था है और अन्ध विश्वास है, इस कारण आज धार्मिक गुरू लोगों की भावनाओं से खिलवाड़ करते हैं और उनका शोषण करते हैं।

बाबा रामपाल, बापू आसा राम, रजनीश, डेरा सच्चा सौदा के बाबा राम रहीम, सदाचारी बाबा आदि कहलाने वाले कई धार्मिक गुरू दुराचार, बलात्कार, हत्या, धोखा धड़ी अपराधों में फँसे हुए हैं। ये सब धार्मिक गुरू न कोई समाज सेवा कर रहे है, न कोई परोपकार न कोई चरित्र-निर्माण, ये बस अपने नीच अनुरागों की पूर्ति कर रहे हैं। परन्तु फिर भी इनके अनुयायियों की संख्या लाखों में है। ध्यान देने योग्य बात यह है कि इसका क्या कारण है?

परम्परागत धर्म दर्शन की यह मान्यता है मनुष्य इस विश्व में रहते हुए कुछ ऐसी गम्भीर चनौतियों और समस्याओं का सामना करता है जिनका समाधान उसके वश में नहीं है। इन समस्याओं से ईश्वर ही मनुष्य को मुक्ति दिला सकता है। धार्मिक गुरू कहलाने वाले यह लोगों की इस कमज़ोरी का लाभ उठाते हैं।

इस पृष्ठभूमि में परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने मनुष्य जगत को निराली शिक्षा दी है। देवात्मा ने विश्व की व्याख्या प्रकृति के आधार पर की है। विश्व में निहित समस्त सजीव एवम् निर्जीव पदार्थ जड़ एवम चेतन प्रकृति से ही उत्पन्न होते हैं। जड़ भारयुक्त है, अचेतन है तथा शक्ति भार रहित है और गति का कारण है। जड़ तथा जीवित शक्ति के द्वारा विश्व में गठन प्राप्त जीवित शक्तियों का विकास हुआ है जो उद्भिद, पशु और मनुष्य जगत के जीवित शरीरों में पाई जाती हैं। डार्विन की भांति भगवान देवात्मा भी मानते हैं कि पशु जगत के विकास से ही मनुष्य की उत्पत्ति हुई है।

हमारे पूजनीय भगवान देवात्मा ने आध्यात्मिकता को एक वैज्ञानिक परिपेक्ष्य में प्रस्तुत

किया है। आध्यात्मिकता का वास्तविक अर्थ आत्मा की उत्पत्ति, उसके स्वभाव, उसके परिवर्तनकारी नियमों, उसकी वृद्धि, विकास और मृत्यु का ज्ञान प्राप्त करना है। भारतीय परम्परा के अनुसार आत्मा अजन्मा और अनादि है, परन्तु देवगुरू ने इस बात का सर्वथा खंडन किया है क्योंकि स्त्री पुरूष के विशेष सम्बन्ध से ही आत्मा का जन्म होता है। आत्मा निर्लेप और निराकार नहीं है बल्कि प्रकृति के अटल नियम के अनुसार इसमें परिवर्तन आते रहते हैं। यदि आत्मा की आन्तिरक चिन्ताएँ और बाह्य क्रियाएँ नीच गतिमूलक तथा पतनकारी हों तो आत्मा पतित हो जाती है और अगर यह चिन्ताएँ और क्रियाएँ श्रेष्ठ एवम् उच्च गतिमूलक हो तो आत्मा श्रेष्ठ बनती जाती है। आत्मा अमर नहीं है क्योंकि प्रकृति के नियमों के अनुसार यह नष्ट हो सकती है। हिन्दू मानते हैं कि आत्मा ब्रह्म का अंश है परन्तु यह बात भी सर्वथा गलत है क्योंकि मनुष्य जगत की सभी आत्माएँ अपने अपने भावों और अपनी अपनी चिन्ताओं तथा कर्मों से विभिन्नताएँ रखती हैं इस कारण वह एक ही व्यक्ति अर्थात् ब्रह्म का अंश कैसे हो सकती हैं। जड़वादियों का मत है कि आत्मा का कोई अलग अस्तित्व नहीं है। किसी मिथ्या, दुराचार, अत्याचार से आत्मा की न तो कोई हानि हो सकती है और न ही किसी परोपकार या पुण्यकर्म से उसे कोई लाभ हो सकता है। जबकि वास्तविकता यह है कि प्रकृति में जड़ और शक्ति दोनों वर्तमान हैं और दोनों को लेकर ही आत्मा का अपना सत्य और पूर्ण अस्तित्व है।

भारतीय दर्शन की भांति देवात्मा दर्शन भी मोक्ष को बहुत महत्व देते हैं और मानते हैं कि मोक्ष को प्राप्त करना मनुष्य का परम ध्येय है। हिन्दू धर्म में यह माना जाता है कि अध्यात्मिक अधिभौतिक और आधिजैविक दुखों से छुटकारा पाना अथवा लौकिक व अलौकिक सुखों की उपलब्धि ही मोक्ष है। बौद्ध धर्म के अनुसार निर्वाण की अवस्था मोक्ष है। मीमांसा में निःश्रेयस अर्थात् स्वर्ग की प्राप्ति को मोक्ष माना जाता है। वेदान्त को 'अहम् ब्रह्मस्मि' अर्थात् जब जीव और ब्रह्म का भेद समाप्त हो जाता है और सांसारिक बन्धन कट जाते हैं, वह मोक्ष की अवस्था है। परन्तु भगवान देवात्मा के अनुसार आत्मा का नीच सुख - अनुरागों और नीच घृणा भावों से मुक्त होना ही मोक्ष है। उच्च अनुराग और उच्च घृणा भावों के उत्पन्न होने से ही मोक्ष की प्राप्ति होती है।

हमारे अद्वितीय शक्तियों से अलंकृत भगवान देवात्मा ने चारों जगतों के सम्बन्ध में निराला ज्ञान दिया है और पूरे साल को 16 यज्ञ साधनों में बाँटा है। उनका विश्वास है कि सभी मनुष्य जगत, पशु जगत, उद्भिद जगत और भौतिक जगत मनुष्य के उपकारी हैं। इसलिए मनुष्य की पहली नैतिक साधना यह है कि वह इन चारों जगतों के अस्तित्वों के प्रति अपने सम्बन्ध को पहचाने, उनके प्रति आदर प्रशंसा कृतज्ञता एवम् सेवा के भाव को विकसित करे तथा उनके सम्बन्ध में उच्चतम एकता उपलब्ध करे। देवात्मा ने सभी के सम्बन्ध में अपने देवशास्त्र में वर्जित कार्यो का भी वर्णन किया है।

परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने परलोक के सम्बन्ध में भी ज्ञान दिया है कि प्रत्येक आत्मा अपने भौतिक स्थूल शरीर का त्याग करने के बाद अपने लिए पहले भौतिक शरीर के समान ही कोई नये भौतिक सूक्ष्म शरीर का निर्माण करता है और कर सकता है। प्रत्येक आत्मा अपने जिस जिस नीच या

उच्च भाव से प्रेरित होकर जो कुछ चिन्ता व क्रिया करता है, उसके अनुसार अपनी स्थूल देह के त्याग करने पर अपने लिए नीच या उच्च श्रेणी के भौतिक सूक्ष्म शरीर निर्माण करता है। तथा उसी श्रेणी के अनुसार परलोक सम्बन्धी किसी नीच या उच्च लोक को प्राप्त होता है। हमारी इस स्थूल पृथ्वी से परे जो इसी तरह की एक और पृथ्वी है, उसे परलोक कहते हैं।

आधुनिक युग में भगवान देवात्मा एक ऐसे धार्मिक गुरू हैं जिनकी शिक्षा महत्वपूर्ण है। वास्तविकता यह है कि भगवान बहुत दूरदर्शी थे। जिन समस्याओं का समाधान सारे विश्व के दार्शनिक धर्मवेत्ता आज तक नहीं खोज सके, उनका वैज्ञानिक विधि से समाधान भगवान ने 100 वर्ष पूर्व ही दे दिया था। भगवान ने स्पष्ट कर दिया था कि आज के नैतिक अवमूल्यों का मुख्य कारण मनुष्य की मूल प्रकृति है। भगवान की पहली श्रेणी की सेवकी में पहुँचकर ही मनुष्य मोटे मोटे पापों से बच जाता है। मुझे विश्वास है कि मानवता एक दिन इस देवधर्म को पहचानेगी और देवगुरू के बताए हुए मार्ग पर चलकर संसार में देवराज अवश्य आएगा।

6 – 12 – 2014, रात को संगीत सभा: - इस सभा में कई धर्म सम्बन्धियों ने जिनमें श्रीमान गुरूदेव राज जी केसूपुरा, श्रीमान किशन सिंह जी चौहान और कुछ और धर्म सम्बन्धियों ने भक्ति भावों से भजनों का गान करके अपने श्रद्धाभाव की तृप्ति की।

7 – 12 – 2014, महोत्सव का विशेष दिन

सुबह 6 बजे के लगभग धर्म सम्बन्धी बाहर सेहन में लाऊड स्पीकर समेत भजनों के गान के लिए एकत्र हुए। बड़े चाव भाव से खूब जोश के साथ भजनों का गान करके भजनों की समाप्ति पर जोश से भरकर जय ध्वनि की। सूर्य उदय के साथ और घंटे की आवाज़ के साथ "प्रगटे देव गुरू भगवान, जीवन ज्योति देने वाले नामक भजन का समूह गान श्रद्धा से भरकर किया गया। उसके बाद ऊंची स्टेज पर खड़े होकर श्रीमान बलदेव सिंह जी ने इस विशेष दिन की सबको मुबारकबाद दी। अपने, अपने धर्म सम्बन्धियों और चारों जगतों के सौभाग्य का दिली श्रद्धा भाव से भरे हुए दिल के साथ वर्णन किया। सब धन्य धन्य महसूस कर रहे थे। सबने एक दूसरे को दिली भावों से मुबारकबाद दी। इसके बाद बैंड बाजें की धुन गूंज उठीं। बीस से ऊपर धर्म सम्बन्धी बैंड की धुन पर खुशी से भरकर नाचते रहे। बड़ा ही स्वर्गिय दृश्य पैदा हो रहा था और अधिकारी आत्मांए भगवान देवात्मा की महिमा को अनुभव कर रहे थे। फिर साथ साथ धर्म सम्बन्धी फूलों के हार लेकर मुख्य हाल में गुरू महाराज की पवित्र छवि के आगे अर्चन का साधन करते रहे, और भावुक होकर नत - मस्तक होते रहे। उच्च हस्तियों परलोकवासी महान आत्माओं के आगे भी सिर झुकाकर अपनी श्रद्धा का प्रकाश होता रहा।

9.00 विशेष सभा, सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी, भजन के गान वा अर्चन के बाद, देव स्तोत्र का गान वा भाव पूर्ण होकर सभापति जी ने उसकी व्याख्या की। उसके बाद परम पूजनीय भगवान देवात्मा के देव दरबार में बहुत ज़ोरदार आशीर्वाद प्रार्थना की कि इस सभा में गुरू का देव प्रसाद अधिक से अधिक अधिकारी आत्माओं को मिल सके और अधिक से अधिक उनका हित हो सके। इस सभा का विषय था "भगवान देवात्मा का परम लक्ष्य

और उसकी सिद्धि के लिए उनका तप और उसके सम्बन्ध में हमारी ओर से कुर्बानियों की आवश्यकता। धन और जन की अपील।

सभापति जी ने फरमाया कि परम पूजनीय भगवान देवात्मा का आर्विभाव नेचर के विकास क्रम का अजूबा है। नेचर के स्वरूप और विकास को समझे बिना इस पक्ष में भी सच्चा ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता। मान्सिक विकास भी हुआ जिसके कारण वैज्ञानिक वा फिलासफर पैदा हुए। हृदय के विकास द्वारा नेक पुरुष और परोपकारी पैदा हुए परन्तु मनुष्य का मूल स्वभाव नहीं बदला। हमारा मूल स्वभाव सुख अनुराग है। हम सुख चाहते हैं, उसके अनुसार ही चलते है, उससे बाहर नहीं जा सकते। सब ऐबों का कारण हमारी सुख वासनाएं हैं। सब नशे सुख के कारण ही लगते हैं। बहुत थोड़े जनों में धर्म के भाव है। हम सुख के दायरे में बन्धे हुए है। इसी कारण मनुष्य बहुत पक्षों में अन्धेरे में है। मनुष्य की आत्मा क्या है? मनुष्य का जीवन का लक्ष्य क्या है? देवात्मा कौन हैं? उनका आत्म जगत में क्या कारज है? इन सबके विषय में मनुष्य अन्धकार में है। देवात्मा को समझने के लिए उनकी देव ज्योति की आवश्यकता है। उनके भीतर कोई सुख अनुराग है ही नहीं । उनका मनुष्य से श्रेणी-गत अन्तर है। सुख अनुराग के स्थान पर वह शुभ अनुरागी हैं। दयावान मनुष्य किसी की भूख मिटा सकता है, वह किसी को भूखा देख नहीं सकता, उसी प्रकार देवात्मा पापाचार द्वारा तबाह होते मनुष्यों को देख नही सकते है। हमारे भीतर कौन से सुख अनुराग हैं, इसका पता इस बात से लग जाता है कि हमारा बहुत सा समय कहां गुजरता है, वही हमारा लक्ष्य है।

परम पूजनीय भगवान देवात्मा के प्रबल हित अनुराग ने और अनुकूल घटनाओं ने उनको जीवन व्रत धारण करने के लिए और पक्का कर दिया । मेरी कारपैंटर, राज राममोहन राय, महात्मा बुद्ध के त्याग और मेजर टक्कर बूथ के जीवनों से उन्हें और बल प्राप्त हुआ । उनमें चारों जगतो के शुभ का इतना गहरा अनुराग था कि जिसने विश्व की भलाई के लिए व्रत धाारण करने के लिए मजबूर कर दिया । मनुष्य के ऊपर पाप और बुराई का राज है। इसीलिए काली देवी आदि के मन्दिर में बली दी जाती है। आज के युग के अचार्य रजनीश पापाचार के कारण बुरे हशर को प्राप्त हुए । मनुष्य की हस्ती की रक्षा उस समय तक नहीं हो सकती जब तक उसके हृदय में नीच अनुरागों और नीच घृणाओं का राज समाप्त नहीं होता । सच्ची मोक्ष बिना आत्मा बच नहीं सकता । मिथ्या मतों ने मनुष्य को जोत स्वरूप वा ब्रह्म स्वरूप या Divine being कहा है, परन्तु इसके उल्ट मनुष्य सुख अनुरागी है नीच घृणाकारी है, नीच सुखों का पुतला है, कैदी है, बन्धुआ है, गुलाम है, मिथ्याचारी वा झूठा है। जैसे कोई कैदी बेड़ीयों के कट जाने से आजाद अनुभव करता है। देवात्मा फरमाते हैं कि नौकरी से आजाद होकर उन्होंने ऐसा ही अनुभव किया । व्रत धारण करने के बाद नया रूप ग्रहण किया । हृदय निर्मल, उच्च आनन्द की लहरें लेने लगा । उनके हृदय की तड़प दूर हो गई, परन्तु मनुष्य आत्माओं ने देवात्मा का घोर विरोध किया । उन्हें दुखी करने का बीड़ा उठा लिया । क्यों? विरोधता का कारण अहं-प्रियता का प्रबल भाव था । अहं प्रियता क्या है? अपने संस्कार, अपना मत, अपने स्वभाव, अपनी रुचि

ही अहं प्रियता है। अपनी वासना, अपनी इच्छा का प्यार भी अहं प्रियता ही है। इसी कारण कुछ मतों के मतवालों ने, परम पूज्नीय भगवान देवात्मा और उनके कारज को मिटाने के लिए कमर कस ली । उनके सेवकों पर हमले करके, उनको जख्मी करके, लहू लुहान किया गया । उनके आश्रम का सामान, बैंचो, लैपों को तोड़ा गया । उन पर अशलील भाषा में पूर्ण झूठे हमले करके परम पवित्र देव हृदय को बेइन्ताह जख़्मी करने का पूरा यत्न किया गया । झूठे, मुकदमों द्वारा तड़पाया गया । एक बदकिस्मत वकील ने अपने जीवन का लक्ष्य, देवात्मा और उनकी देव समाज को पंजाब से बाहर निकालना है, बना लिया । जैसे पागल कुत्तों को नही पता कि किस को काटना है, इन्सान भी उसी प्रकार पागल हो गए थे ।

परम पूज्नीय भगवान देवात्मा अपने प्रभावों द्वारा विरोधी वकीलों से जीत प्राप्त करके भी हितों की वर्षा करते रहे। बड़े - 2 पापियों, दुराचारियों को बदलकर सेवाकारी बनाने का आश्चर्यजनक किश्में पैदा करते गए । लड़कियों को मारने वाले उनके लिए स्कूल खोलने वाले बन गए । कई 80 वर्ष की उमर में भी परोपकारी बन गए । माल महकमें के लोग सरदार सावन सिंह जी को उन्हें फरिश्ता तहसीलदार के नाम से जानते थे ऐसे तहसीलदार पैदा कर दिए। जुल्मों और पापों के परिशोध कराके स्वर्गिय दृश्य पैदा हुए हैं।

परन्तु कई कृतघ्नों ने ऐसी परम निर्मल, परम पवित्र जात पर जुल्म ढाने में कोई कसर नही छोड़ी । देवगुरू भगवान को लहौर छोड़कर मिन्टगुमरी रहना पड़ा । दुखों और सदमों ने देवआत्मा के निरोगी शरीर को रोगों का घर बना दिया । श्री सभापति जी ने देवात्मा के त्यागों, कुर्बानियों, दुखों, तड़पनों की ऐसी तस्वरीर पेश की उन्होंने रो रोकर उन दुखों का वर्णन किया । कई अधिकारी श्रोतागणों की आंखों से भी बेबस आंसू निकल रहे थे । यह सभा लगभग 3 घण्टे तक चली । ऐसा महसूस हो रहा था कि जैसे देव प्रभावों की गंगा बह रही है।

इसी आलम में श्रीमान जी ने अति मार्मिक शब्दों में जन और धन की अपील की, जिसके परिणाम स्वरूप चार सौभाग्यवान जनों ने अपनी शक्तियां देवात्मा के मिशन में लगाने का प्रण लिया ।

1. श्री प्रकाशचन्द जी दिवान साहिब - श्री गंगा नगर
2. डाक्टर मुनशा सिंह जी , पदमपुर
3. श्री सुखदेव सिंह जी इंगलैंड
4. श्री अग्रवाल साहिब - लखनऊ

कई जनों ने सत्संग से लाभ उठाने के लिए नाम लिखवाए पौने दो लाख के करीब दान इकट्ठा हुआ ।

<u>बच्चों की सभा</u> :- 2½ बजे के करीब 12 वर्ष से छोटी उमर के नन्हे मुन्हें बच्चों ने गुरूमहाराज की महिमा के भजन वा जीवन कथाए बहुत सुन्दर ढ़ंग से सुनाई और यह सभा प्रिसीपल श्रीमति सुरजीत बराड़ जी ने conduct की और सरोज जी कुक्कड़ ने ईनाम लाने और देने में उनकी मदद की

संगीत सभा :- इस सभा में श्रीमान डाक्टर विनोद जी खेड़ा की संस्था के बच्चों ने बहुत सुन्दर भजनों का गान किया । वह सदा ही संगीत सभा के लिए बहुत तैयारी और पैसा खर्च करके बहुत प्रभावदायक प्रोग्राम देते हैं।

B.Ed. कोलेज की भूतपूर्व लैक्चरार ने बहुत श्रद्धा से भरकर "सुरक्षित हूं मैं हे भगवान,

तुम्हारे हाथ में आकर" नामक भजन का बहुत सुन्दर तर्ज पर गाया। श्री सुखदेव जी के एक दोस्त ने जो इंगलैंड से साथ आए थे। "साडा देव उत्सव है आया, सानूं खुशिया चढ़िया जी" बहुत जोश के साथ भर कर गया । दो भजन खेड़ा साहिब के प्रबन्ध से साज वालों ने भी गाए । सारा प्रोग्राम बहुत ही सुन्दर प्रभाव डालने वाला था ।

7 दिसम्बर 2014 सांय 4 बजे एक पब्लिक लैक्चर हुआ। जिसका विषय था "समय की सबसे बड़ी ज़रूरत।" सभापति श्रीमान बलबहादुर जी थे तथा वक्ता श्रीमान डा० विनोद खेड़ा।

वक्ता ने आरम्भ में Steve Jobs जो कि Apple कम्पनी के सह निर्माता थे के जीवन की कुछ बातों का वर्णन किया। यह कम्पनी आज भी दुनिया की श्रेष्टतम एवं सबसे अधिक मूल्यवान ब्रांड मानी जाती है।

Steve Jobs ने "Please help me" (कृपया मेरी सहायता कीजिए) के महत्व को समझा और उसका प्रयोग 12 वर्ष की आयु में ही किया जहां से उनके उत्थान का आरम्भ हुआ। हम मनुष्य अक्सर अपने अंह के दास होने के कारण दूसरों से सहायता मांगने में झिझकते हैं।

जिस दूसरे नियम का पालन Steve Jobs ने किया वह है वातावरण को समझना तथा इर्द गिर्द के बुरे वातावरण से बचना।

तीसरा नियम हैं Action यानि कार्य (Positive) सोचविचार हमारे जीवन को बेहतर बनाने के लिए काफी नहीं है। वकता ने इस महत्वपूर्ण सिद्धांत को "Power of Positive Thinking" नामी एक विश्वविख्यात पुस्तक में दिए गए एक काल्पनिक उदाहरण से समझाया कि किस प्रकार एक व्यक्ति 6 महीने तक ईश्वर से दिन रात ज़ोरदार प्रार्थनाएं करता रहता है कि मेरा लाटरी का टिकट निकल जाए और मैं एक झटके में अमीर बन जाऊं पर उसने तो लाटरी का टिकट खरीदा ही नहीं।

वक्ता ने बताया कि हम मनुष्य हवा में किले बनाते रहते हैं परन्तु हमें उनके नीचे नीवें भी बनानी पड़ेंगी। डा० खोड़ा ने एक रोचक मगर काल्पनिक कहानी के माध्यम से यह स्पष्ट करने की कोशिश की कि एक जुर्म करने वाला (Criminal) व्यक्ति किस प्रकार एक राजकुमारी से विवाह करने की ज़ोरदार इच्छा के कारण बदलकर एक भला इंसान बन गया यह परिवर्तन तो एक काल्पनिक कहानी के माध्यम द्वारा उच्च परिवर्तन आने की बात को समझाने का एक प्रयासमात्र था। डा० खेड़ा ने बड़े भावुक होकर यह बताया कि परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने वास्तव में इसी पृथ्वी पर सैकड़ों और हज़ारों Criminals का कायाकल्प किया है और इस नरक समान पृथ्वी पर सच्चा स्वर्ग उत्पन्न किया है।

वक्ता ने सबसे पहले अपने जीवन में हुई कई गल्तियो के विषय में वर्णन किया जो कि परम पूजनीय भगवान देवात्मा के देव प्रभावों से उन्हें नज़र आई कि उन्हीं देव प्रभावों ने वक्ता को अपनी गल्तियों का परिशोध करने के लिए मज़बूर कर दिया। उन्होंने श्रीमान जगदीश प्रसाद जी कुक्कड़, परलोक वासी श्रीमान भगत सिंह जी इत्यादि के जीवनों में आए बहुत विस्मयजनक उच्च परिवर्तनों का भावपूर्ण विश्लेषण किया कि किस प्रकार उनका जीवन अपने वा दूसरों के लिए महा हानिकारक व दुखदायी बन रहा था और वे कैसे भगवान देवात्मा के प्रभावों में आकर

बहुत शानदार और सेवाकारी जीवन व्यतीत करने लग गए।

अपने पब्लिक लैक्चर के अगले चरण में श्रीमान डा० खेड़ा ने वर्तमान राधास्वामी सत्संग (ब्यास) के गुरू श्री गुरिंदर सिंह जी ढिल्लों के पड़दादा श्रीमान सरदार साहब जमीयत सिंह जी के जीवन में परम पूजनीय भगवान के सम्पर्क मात्र से आए असाधारण उच्च परिवर्तन का संक्षेप में वर्णन किया वही सरदार जी जो गहरे मिथ्या विश्वासी और धर्म के कट्टर अनुयायी होकर, मुस्लिम धर्म की मुनाजातें (प्रार्थनाएं) कबरों में जाकर करके, हां, सुबह चार बजे उठकर, नहाकर एक-एक मंत्र को सवा लाख बार तक जाप करके भी चैन नहीं पाते थे, पाप कर्मो में फंसे जाते थे, शराबें पीना, मांस खाना, रिश्वत लेना तो साधारण बात समझते थे। वहीं श्रीमान सरदार जमीयत सिंह जी भगवान के देवप्रभावों को प्राप्त करके न केवल स्वयं परन्तु अपने परिवारिक जनों को भी बुरे रस्मों रिवाजों से, मिथ्या विश्वासों से, आपसी लड़ाई झगड़ों से छुटकारा दिलाने में सक्षम हो गए। वह कितने ही सद्गुण यथा ईमानदारी, ज़िम्मेवारी, सत्य निष्ठा, न्याय प्रियता, त्याग, सेवा, वफादारी, साहस, पूरी तरह भरोसे के लायक, श्रद्धावान, कृतज्ञता, हानि परिशोध, पर दुख व पर अभाव निवारण इत्यादि शुभ गुणों से अलंकृत होते चले गए। अंग्रेज़ Deputy Commissioners, Judges, Governer एवं वायसराय द्वारा उन्हें असाधारण गुणों के कारण सम्मानित किया गया और उस सम्मान में देव समाज के योगदान को भी स्वीकृत किया गया।

वक्ता ने आगे चलकर यह भी बताया कि जहां राधास्वामी मत (ब्यास) के गुरू श्री गुरिंदर सिंह जी ने जो उनके जीवन चरित्र को अंग्रेजी में अनुवाद करके 2005 में प्रकाशित किया है वहां अपने विश्वासों के अनुसार कई विश्वास उसमें डाल दिए, जिन पर वह बिल्कुल विश्वास नहीं करते थे।

आगे चलकर वक्ता ने अपने श्रद्धेय दादा जी (श्रीमन देवबल जी) के जीवन में आये आश्चर्यजनक उच्च परिवत्रन की गाथा संक्षेप में प्रस्तुत की। उन्होंने बताया कि किस प्रकार अपने आप को एक अनघड़, उजड्ड, जंगली, वहशी कहने वाले व्यक्ति के जीवन में भगवान ने क्रांति उत्पन्न कर दी और उनके परिवार को कैसा महादान दे दिया। अंत में वक्ता ने अपने श्रद्धेय पड़नाना जी (श्रीमान डा० सिरी राम जी) की जीवन गाथा का समय के अभाव के कारण संक्षेप में वर्णन किया। वे 34 वर्ष तक राधास्वामी मत (दयालबाग, आगरा) के अनुयायी रहे और उस मत के गुरू के बहुत निकटी रहे। उनका पारिवारिक जीवन नरक बन चुका था। कलह कलेश, लड़ाई झगड़ा साधारण बात थी जबकि बाहरी विचार से उनका घराना बहुत बड़ा और बहुत अच्छा समझा जाता था। डाक्टरी धंधे में बेईमानी, कोकेन बेचना, औरों का धन हड़पना एक साधारण बात थी। उनके पुत्र उन्हें मारने तक को तैयार थे। उनकी पत्नी तथा पुत्र वधु बेहद परेशान थे। आलस्य, मोहबंधन का तो कहना ही क्या? डाक्टर होकर बददरहेजी और बदमिज़ाजी से बहुत बीमार रहने लग गए थे, कई बार मौत के निकट पहुंच गए थे। परंतु 60 वर्ष की आयु में देव समाज की उच्च संगत ने तो उनकी काया ही पलट दी। परिवार स्वर्ग का नमूना बन गया। वह जो अपने राधास्वामी गुरू को एक रुपये का सिक्का इस प्रकार दान देते थे जिससे वह और सिक्कों से टकराकर दो रूपये का प्रतीत हो, अपने से

मकान और बहुत सा धन भगवान देवात्मा के अत्यंत उच्च कार्य में भेंट कर दिए। बिमारियों, मोह, धन अनुराग, आलस्य इत्यादि से मुक्त हो गए। गाली गलौच की जगह उच्च धर्म संगीतों ने ले ली।

आज जब मानवता बहुत गहरे अंधकार, मिथ्या विश्वासों, पापों में ग्रस्त है और घर - घर शहर - शहर, देश - देश में पाप की भयंकर अग्नि लटें मार रही है वहां इस समय की सबसे बड़ी ज़रूरत को केवल और केवल परम पूजनीय भगवान देवात्मा के देव प्रभाव ही पूरी कर सकते हैं।

अंत में सभापति श्रीमान बलबहादुर जी ने वक्ता का दिल से धन्यवाद किया और उनकी अथक मेहनत से तैयार किए गए लैक्चर की तहदिल से प्रशंसा की।

8 - 12 - 2014, पहली सभा सुबह 9 बजे ।

सभापति श्रीमान किशन सिंह जी चौहान ।

विषय - नये सेवक सेविकाओं का ग्रहण

सबसे पहले एक सुन्दर भजन का गान हुआ, तत्पश्चात गुरू महाराज का उनकी भव्य छवि द्वारा बहुत सुन्दर फूल माला से अर्चन किया गया, सबने खड़े होकर पावन देव स्त्रोत का समूह गान किया । सभापति जी ने व्याख्या की और सभा की सफलता के लिए बड़े अच्छे भावों के साथ सहाय प्रार्थना की । उसके बाद फिर एक भजन का गान किया गया ।

फिर सभापति जी ने प्रतिज्ञाओं के बारे में बड़ा सुन्दर ब्यान किया और बताया कि चार प्रकार की प्रतिज्ञाएं हैं। पहली परम पूजनीय भगवान देवात्मा के सम्बन्ध में, दूसरी पापाचार के सम्बन्ध में 8 प्रतिज्ञाएं हैं, तीसरा सदाचार के सबन्ध में प्रतिज्ञाएं हैं, सब सेवकों को अपनी प्रतिज्ञाएं सदा स्मरण रहनी चाहिए । सभापति जी का विषय अनुसार ब्यान बहुत ही सुन्दर और सराहनिय था।

निम्नलिखित जनों को सेवक सेविका बनाया गया

1. श्री, पी.सी. दिवान गंगानगर, रिटायरड प्रिंसीपल
2. गुरिन्द्र सिंह मान
3. 116 वर्षिय श्री धर्म पाल सिंह जी, धावक
4. अदित्य
5. शौर्य
6. देव आस्था

सबका परिचय एक - 2 सुयोग्य सेवक ने कराया, वह सारा दृश्य बहुत सुन्दर था । परम पूजनीय भगवान देवात्मा के प्रभावों के कारज को दर्शाने वाला था । हाजरीन ने परिचय द्वारा बहुत प्रभावित होने का अवसर पाया, जिससे उनके हृदय भगवान के प्रति झुक रहे थे ।

सभापति जी ने विजय पताका के तले सबको खड़े करके बहुत ही अच्छे और सबके समझ आने वाले हृदय स्वर्षीय ढंग से प्रतिज्ञाएं करवाई। प्रतिज्ञाओं के होने के पश्चात नये सेवकों का बहुत से जनों ने सम्मान प्रदर्शन करने के लिए फूल मालाओं से लाद दिया । कई जनों ने सेवक बनने की खुशी में अच्छा दान भी दिया। उसके बाद शुभ कामना सम्बन्धी भजन का गान किया गयाा । इस प्रकार यह सुन्दर सभा सफलता से सम्पन्न हुई।

दूसरी सभा :- प्रात: 11 बजे सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी

भाव प्रकाश

सभा से पहले सभापति जी ने महोत्सव की शानदार कामयाबी के लिए परम पूजनीय भगवान और अन्य सहायकारी शक्तियों और दूसरे सेवाकारियों को

हृदय की तह से धन्यवाद दिया, फिर महोत्सव की सारी कार्यप्रणाली को दुहराते हुए हाजरीन के समक्ष सभाओं को स्मरण कराया और फिर भाव प्रकाश करने के लिए निमन्त्रित किया :-

किशन सिंह जी चौहान : इस स्थान पर दूसरी बार आने पर महोत्सव में शामिल होने का अवसर मिला है। बिल्डिंग में शानदार परिवर्तन और नई सड़क को बना देखकर बहुत-2 धन्यवाद का भाव पैदा होता रहा । इस जगह परम पूजनीय भगवान का सही काम हो रहा है। मैं इस महोत्सव पर न आता तो बहुत घाटे में रहता । इस सुन्दर वातावरण में बैठकर बहुत लाभ हुआ है। सभाओं का स्तर और वातावरण बहुत प्रभावशाली रहा। क्या सभाएं और क्या लैक्चर बहुत ही प्रभावशाली थे । मेरे बेटियों के तीन बच्चों के सेवक बनने की बहुत खुशी है।

सुरजीत सिंह बुलाना :- यहां आने पर बहुत सुन्दर प्रभाव मिले हैं। मैं बहुत प्रभावित हुआ हूँ। सभाओं से मुझे बहुत लाभ हुआ है। मेरे अपने घमंड और स्वेच्छाचारिता ने मुझे बर्बाद कर दिया । मैं समाज से कट गया । मैने रुपये जमा करवाने और पत्र लिखने के दण्ड भी पूरे किए । मैं 85 वर्ष की उमर तक पहुंच रहा हूं । यह गुरू की कृपा से उमर कट पाई है और जो भला हुआ है, उसका ब्यान नहीं हो सकता । मैं इस वातावरण से ज्यादा से ज्यादा लाभ उठा सकूं। किताबे ली हैं, पाठ करूंगा ।

धर्मपाल जी (नये 116 वर्षिय सेवक मेरठ) बड़े सौभाग्य की बात है कि मैं इस मुबारक महोत्सव के अवसर पर सेवक बन गया हूं । मैं अपने सारे जीवन को उनकी शिक्षा और सिद्धान्तों के प्रचार प्रसार को समर्पित करता हूं। जहां जाऊंगा, वहां भगवान देवात्मा के बल को पाकर प्रचार करूंगा । जीवन की कला भगवान देवात्मा की रोशनी में पता चलती है। इन्सान बहुत बड़े अन्धेरे में भटक रहे हैं। मैं बहुत सोच समझ कर यहां सेवक बना हूँ । मै इस शिक्षा को और सिद्धान्तों को अपने परिवार, अपने गाँव, अपने प्रदेश वा देश, प्रदेश तक फैलाऊंगा । अपने आपको पूरी तरह समर्पित करना चाहता हूँ ।

श्रीमान जलधर जी (दड़वा) : महोत्सव में शामिल होकर मेरा ध्यान मेरे उपकारियों की तरफ गया है। मुझ मजदूर को कई उपकारियों ने मिलकर पढ़ाई कराई और मैं बी.ए. तक पढ़ गया । मेरे भाई मधू सुदन जी ने चार साल घर पर रखा, मेरी बहुत सेवा की (रो रोकर) उन्होंने मुझे सब तरह खाने पीने को भी दिया, पढ़ाया भी । माननिय माता विद्यावती जी खेड़ा ने मुझे समाज से जोड़ा । मजदूरी और दिहाड़ी के पैसे दे देकर मुझे सभाओं में बुलाया और मेरे दुख को दूर करने के लिए रात को अपनी गाड़ी पर चमन जी को लेकर आती रही और मुझे पैसों से भी मदद करती रही। मैनें अपने काम पर एक साथी से शराब और मांस छुड़ा दिया है, यह सब गुरू महाराज की कृपा है। काम पर साथियों पर संग्राम करता रहूंगा । लोगों को भी पढ़ाऊँगा । हर साल महोत्सव पर आकर सेवा करूंगा। (इस महोत्सव पर भी इन्होंने अच्छी सेवा करके अपना भला किया)

प्रिंसीपल पी. सी. दिवान जी (गंगानगर नये सेवक) मेरी उमर 79 साल है। मुझे 36 साल के रोल माडल समाज के सेवक श्री गोपाल जी ने बेहद प्रभावित किया । उनकी बातचीत से मैं हैरान भी हुआ और प्रभावित भी हुआ । इनको बार बार मिलता रहा। 4-4 घण्टे इन्तज़ार करने के बाद इनसे बात करने के लिए समय पाता रहा । बिल्कुल नई सोच मिली है।

सितम्बर के सत्संग की मै बड़ी बेसबरी से इन्तज़ार करता रहा । मैं कुछ नही जानता था कि देव समाज क्या? भगवान देवात्मा कौन हैं? मैं यहां सत्संग में आकर बहुत प्रभावित हुआ हूँ । बहुत सी पुस्तकें पढ़ी हैं। 25 - 30 वर्ष कितने धर्म स्थानों में गया, गुरूओं को धारण किया, धर्म स्थानों पर गया । कुरान, बाईबल और ग्रन्थों का अध्ययन किया, जब इस जगह आया तो हैरान ही रह गया । 45 वर्ष पहले एक बिमला नाम की स्कूल प्रिंसीपल थी, उसने पढ़ने की प्रेरणा की । मैंने पढ़ना शुरू किया, यहां तक कि M.A. तक पढ़ा और जब मैने मुझ में देव जीवन का विकास पढ़ा और धन्य धन्य हो गया, फिर मैंने करणपुर में एक परिवार को लेकर श्रीमान जी (बलबहादुर सिंह जी) को बुलाकर सत्संग कराई, वहां एक स्कूल में भी सभाएं करवाई। वहां 4 दिन में 7 सभाएं हुई। मेरी तमाम जिन्दगी काली थी । इस सत्संग में आकर अब वह कुछ साफ होने लगी है। (वह बोलते बोलते बहुत भावुक हो गए, आंसू बहने लगे और गला रुक गया) फिर बिठा दिए गए। परम पूजनीय भगवान देवत्मा के अनुपम प्रभावों की उनके अधिकारी हृदय पर भारी जीत होने लगी है।

श्री अकबरपुर के नौजवान (नये सेवक) मैं अपने माननिय नाना जी का बेहद ऋणी हूं कि उन्होंने अब मुझे देव समाज से जोड़ दिया है। बेहद खुशी मिली है। मेरी मासी जी के बच्चे भी साथ सेवक बने हैं, उनके सेवक बनने की भी बहुत खुशी हुई । मैं हमेशा नाना जी और नानी जी की आज्ञा पालन करूंगा ।

श्रीमान सुखदेव सिंह जी (लंदन) इस अद्वितीय समागम में शामिल होकर बड़ी खुशी हुई है, मुझे सेवक बनने की महानता का पता ही नहीं चला, अब यहां आकर पता लगा है और सेवक बनने की महिमा बेहद सामने आई है। मूल वाक्य की महिमा का पता नहीं था । भगवान के प्रभाव ऐसा सुन्दर वातावरण बनाते हैं, जो सारे संसार में एक वाहद और निराला है। हमारा तीन पक्षों में भला हुआ है। हम सबकी गुरू महाराज की शिक्षा फैलाने की जिम्मेवारी है। गुरू महाराज की छवि हम सब को घरों और दफतरों में लगनी चाहिए । ऐसी सुन्दर देवत्व की मूर्ति के असर महसूस करके एक अंग्रेज ने बड़ा सुन्दर लिखा था। नेचर में ऐसा वक्त जरूर आवेगा कि भगवान का कारज बढ़ेगा। हम सब मिलकर ज्यादा से ज्यादा जोर लगाए । मुझे अपनी कमियां नज़र आई हैं। बहुत समय रुपया कमाने में चला गया । अपनी बहुत भारी जिम्मेवारी है कि इस काम को फैलाऊं।

श्रीमान जगजीत सिंह जी (लुधियाणा) श्रीमान सुखदेव सिंह जी के भावों को जानकर बहुत खुशी मिली है। ऐसा महसूस होता है कि महोत्सव पर आना सफल हुआ है। अपनी तरफ ध्यान गया है। अपने अन्दर बहुत कमियां हैं, उन्हें छुपाना नहीं चाहिए । अमली जीवन ही प्रचार करता है। जिन्दगी में अपनी कमज़ोरियों की तरफ ध्यान न दिया तो क्या जिए । हमारी कमाई दूसरों कें काम न आए, तो जीवन निष्फल जाएगा । दूसरों के काम आने के लिए बार - बार कुछ कने को दिल जाता है। सेवा के काम करने से खुशी मिलती है। इस दर के बिना बर्बाद हो जाते। मांस, शराब ही नाश कर देती । बाहर की दुनियां से कटकर रक्षा हुई है। यह संगत मिली है। गुरू का सन्देश औरों तक पहुँचाना है। यह संगत मिली है। गुरू का सन्देश दुनियां में जाए, मैं कुछ करके जाऊं,

जीवन निष्फल न जाए ।

ओम प्रकाश आदर्श जी ने अपनी शैली में बड़ी अच्छी कविताएं गाई।

रजिन्द्र जी (देहरादून) मै कभी भी सभा नहीं छोडूंगा, (जारो कतार रो रोकर) मुझे इस गुरू ने बचाया है। हम कभी भी अपने लिए कमरे की मांग करके आगे से दुखी नहीं करेंगे । दूसरों से लिया कर्जा शीघ्र से शीघ्र वापिस करेंगें (दोनो पति पत्नी में स्टेज पर आकर रो रोकर धन्यवाद दिया)

मर्धू - सूदन जी (लिखकर दिया) श्रीमान जी जब से महोत्सव की तैय्यारियों में सहायक होने का मौका मिला है, बहुत खुशी हुई है। श्रीमान जगदीष जी से प्रेरणा मिलती थी और हितकर बातचीत भी होती थी। श्रीमान सुखदेव जी का बेहद धन्यवादी हूं जिन्होंने देव आश्रम की ऊँची building मुहैय्या करवाई। उस पर विजय पताका लगाने के लिए हम दोनों भाईयों के साथ जगदीष जी भी ऊपर चढ़े जबकि डाक्टर ने उनको मना किया हुआ है। यहां पर महोत्सव की रौनक 5 तारीख को देखकर दिल उत्साह से भर गया। ऐसे गुरू को देने के लिए मेरे पास कुछ भी नहीं है। प्रौफैसर साहिब का भाव प्रकाश सुनकर बहुत प्रेरणा मिली, मुझे बहुत झझकोरा। जो 2 धर्म सम्बन्धी यहां सेवा करते रहे, वह बहुत प्रेरणादायक थे।

वीरपाल (समराला) :- बहुत ही सत्कार योग्य श्रीमान जी, आने लगे तो लगता था कि इस बार छुटिट्यां लेनी पडेंगी, घर का ख़्याल कौन रखेगा, परन्तु सभाएं इतनी शानदार और प्रभावशाली थी कि गुरू की कृपा से कुछ भी याद नहीं रहा। ऐसा दिल करता था कि जीवन ही दान कर देना है। अपनी बड़ी ही गल्तियां नज़र आई हैं, गुरू की कृपा से ही बचा जा सकता है। कोशिश करूंगी कि दिसम्बर की छुटिट्यों में घर सभाएं करवाऊं। यदि श्रीमान जी समय दे सकेंगे, तभी सम्भव होगा। श्रीमान जी हमारा बहुत ध्यान रखते हैं, मैं उनकी अति धन्यवादी हूं। जितना यह हमारे लिए करते हैं, हम समाज के लिए कुछ भी नहीं कर रहे। इसलिए क्षमा याचक हूं।

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने , कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। :-

श्रीमान बलदेव सिंह जी,
House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 4638229, 2716914

वार्षिक मूल्य 50 रूपये

Published on 5th of the month
20

Regd. Postal No.CHD (0077) 2012-14
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

कल्याण सत्संग

सम्मान के योग्य श्रीमान/श्रीमति जी,

सत्यदेव की जय

विषय :- कल्याण सत्संग

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि पिछले तीस सालों के लगभग से, यहां कल्याण सत्संग मनाया जा रहा है। इस वर्ष भी कल्याण मलका (भटिंडा) में देव समाज उत्सव के अवसर पर यह विशेष सत्संग रखा गया है। इस दफा यह सत्संग 12 फरवरी वीरवार से 15 फरवरी रविवार दोपहर तक रहेगा। माता-पिता सम्बन्धी विशेष सभा 15 फरवरी को रखी गई है।

कल्याण के लिए भटिंडा से, मोगा से, भगता से, रामपुरा से सीधी बसें मिलती है।

12 तारीख की सभा रात 7 बजे के लगभग शुरू होगी, ताकि बाहर से आने वाले साथी सेवक शामिल हो सकें ।

आपके ठहरने, खाने पीने आदि की सेवा की खुशी स्थानीय सेवक प्राप्त करेंगे ।

आपको इस शुभ अवसर पर आप पहुँचना चाहिए और किसी के भले को सामने रखकर औरों को भी प्रेरित करके साथ लाना चाहिए ।

यहां आकर फिर कभी आपको पछताना नहीं पड़ेगा, बल्कि सौभाग्य महसूस होगा ।

अलग निमन्त्रण पत्र नहीं भेजे जाएंगे ।

आप का हेतू

बलदेव सिंह, मन्त्री

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर*
म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।

Book Posts